www.sgbauonline.com

AU–1467

B.Com. (Part-III) Examination

SANSKRIT (Compulsory)

(Languages)

Time : Two Hours] [Maximum Marks : 35

Note :— Write answers in the medium offered.

सूचना :— उत्तरे स्वीकृत माध्यमातून लिहावीत.

सूचना :— उत्तर स्वीकृत माध्यम में लिखिये।

1. Translate any **TWO** of the following : 10

कोणत्याही **दोन** श्लोकांचा अनुवाद करा :

किन्हीं **दो** पद्यांशों का अनुवाद कीजिये :

(i) नन्वेष त्वरितसुमन्त्रनुद्यमान-

व्यावल्गत्प्रजवनवाजिना रथेन ।

उद्घातप्रचलितकोविदारकेतु:

श्रुत्वा न: प्रधनमुपैति चन्द्रकेतु: ।।

(ii) अयं शैलाघातक्षुभितवडवावक्त्रहुतभुक्

प्रचण्डक्रोधार्चिर्निचयकवलत्वं व्रजतु मे ।

समन्तादुत्सर्पन्घनतुमुलसेनाकलकल:

पयोराशेरोघ: प्रलयपवनास्फालित इव ।।

(iii) जातस्य ते पितुरपीन्द्रजितो निहन्तु-

र्वत्सस्य वत्स कति नाम दिनान्यमूनि ।

तस्याप्यपत्यमनुतिष्ठति वीरधर्मं

दिष्ट्या गतं दशरथस्य कुलं प्रतिष्ठाम् ।

www.sgbauonline.com

www.sgbauonline.com

2. Answer any **ONE** of the following questions : 10

खालीलपैकी कोणत्याही एका प्रश्नाचे उत्तर लिहा :

निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिये :

(i) Sketch the character of चन्द्रकेतु

चन्द्रकेतूचे स्वभावचित्रण करा

चन्द्रकेतू का स्वभावचित्रण कीजिये।

OR/किंवा/अथवा

(ii) Describe the conversation between चन्द्रकेतु and लव

चन्द्रकेतु आणि लव यांच्यातील संभाषणाचे वर्णन करा

चन्द्रकेतु और लव के बीच हुए संभाषण का वर्णन कीजिये।

3. Translate any **TWO** shlokas of the following : 10

खालीलपैकी कोणत्याही दोन श्लोकांचा अनुवाद करा

निम्नलिखित में से किन्हीं दो पद्यांशो का अनुवाद कीजिये :

(i) हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णाति यत्सर्वदा

ह्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं पराम्।

कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धनं

येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः कस्तैः सह स्पर्धते।।

(ii) प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः

प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः

विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः

प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति।।

www.sgbauonline.com

www.sgbauonline.com

4. Recognise the form (any **FIVE**) : 5

रूपे ओळखा (कोणतीही **पाच**) :

रूप पहचानिये (कोई भी **पाँच**) :

(i) नेतृणाम्

(ii) पितरि

(iii) सर्वस्मै

(iv) सर्वाभि:

(v) स्तादिष्यत:

(vi) प्रक्ष्यथ

(vii) अपठन्

(viii) प्राबुध्यथा: ।

www.sgbauonline.com